27.04.2020

PAGE:
DATE:

Dr. Purnima Singh
B.A IInd year political science
Department, paper - II
Indian political Thought, Lecture 22
Topic - Vivekanand

~~Vivekanand~~ ~~Swami Vivekanand~~

Swami Vivekanand

स्वामी विवेकानन्द भारत की महान विभूति थे और भारतीय समाज उनका सदैव ऋणी रहेगा। गाँधी, तिलक, अरविन्द घोष और टैगोर सभी उनके जीवन और चिन्तन से प्रभावित थे। उन्होंने अपने कर्मठ और तेजोन्मय जीवन तथा गहन सामाजिक, आध्यात्मिक एवं राजनीतिक विचारों की छाप विदेशों तक में छोड़ दी। विदेशों में भारतीय संस्कृति की महानता को, धर्म के सार्वदेशिक स्वरूप को उन्होंने जितने स्पष्ट और तार्किक रूप में रखा, वैसा उनके पूर्व न किसी भारतीय ने किया और न ही उसके बाद कोई भारतीय कर सका।

स्वामी विवेकानन्द का जन्म 12 जनवरी 1863 को कलकत्ता के एक परिवार में हुआ था। उनका असली नाम नरेन्द्रनाथ दत्त था। विवेकानन्द नाम तो सन्यास ग्रहण करने के बाद शिकागो (अमेरिका) में धर्म संसद में भाग लेने के लिए बम्बई से ~~प्रस्थान~~ प्रस्थान करते समय ग्रहण किया।

दार्शनिक एवं धार्मिक विचार

Religious and philosophical Ideas

वेदान्त सम्बन्धी विचार

विवेकानन्द के चिन्तन और व्यवहार की आधारशिला वेदान्त की शिक्षाएँ थीं। उन्हें धर्म तथा दर्शन के प्रति विशेष लगाव था। उन्होंने वेदान्त दर्शन को व्यावहारिक रूप देने का प्रयास किया। उनका दृष्टिकोण व्यापक था तथा प्रत्येक संस्कृति की अच्छाइयों को वे आदर की दृष्टि से देखते थे और उन्हें स्वीकार तथा सीखने में संकोच नहीं करते थे। वास्तव में उनका चिन्तन व्यावहारिक जीवन से सम्बद्ध था न केवल मानसिक जगत में विचरण करने वाला। अन्य भारतीय सन्तों की भाँति उन्होंने भी ब्रह्म को पूर्ण सत्य माना और उसे सर्वोच्च सत्ता मानते थे। विवेकानन्द का वेदान्त दर्शन तीन मुख्य स्तम्भों पर आधारित था: (i) मानव की वास्तविक प्रकृति ईश्वरीय है (ii) जीवन का लक्ष्य उस ईश्वरीय प्रकृति की अनुभूति है, और (iii) समस्त धर्मों का मूल लक्ष्य समान है। उनके अनुसार वेदान्त संसार त्यागने का उपदेश नहीं बल्कि समस्त विश्व को ब्रह्ममय करने का पाठ सिखाता है। 'ईशावास्यमिदम् सर्वम्' की धारणा से उनके विचारों में अद्वैत, द्वैत और विशिष्टाद्वैत तीनों का अद्भुत सम्मिश्रण देखने को मिलता है। उन्होंने ईश्वर को निर्गुण और सगुण दोनों रूपों में स्वीकार किया। वे सत्य की अनुभूति के लिए ज्ञान, भक्ति और कर्मयोग तीनों का ही समन्वय आवश्यक मानते हैं। सरल शब्दों में वेदान्त का आदर्श है — मनुष्य को सच्चे स्वरूप को जानना और उसे प्यार करना।

धर्म की आवश्यकता

धर्म के सम्बन्ध में विवेकानन्द के विचार बुद्धिवादी और वैज्ञानिक तर्कों पर आधारित थे। वे धर्म को व्यक्ति तथा राष्ट्र दोनों को ही शक्ति प्रदान करने वाला प्रेरक तत्व मानते थे। उनके धर्म का सार शक्ति है। इस सम्बन्ध में उनका स्पष्ट मत था : "मानव जाति के भाग्य-निर्माण में जितनी शक्तियों ने योगदान दिया है और दे रही हैं, उन सब में धर्म के रूप में प्रकट होने वाली शक्ति से अधिक कोई महत्वपूर्ण नहीं है। विवेकानन्द ने धर्म को सामाजिक संगठन और सहयोग की मूल शक्ति माना।

सामाजिक चिन्तन

विवेकानन्द सामाजिक सुधारों के प्रति सजग और इस सम्बन्ध में उनके विचार स्पष्ट थे। उनके हृदय में एक आँधी थी, उनकी आत्मा में एक आग थी और वह भारत को जगाना तथा ऊपर उठाना चाहते थे। सामाजिक कार्यों के प्रति उनकी लगन इसी तथ्य से स्पष्ट है कि उनका आग्रह था कि सामाजिक सेवा कार्यों को आध्यात्म-साधना के एक महत्वपूर्ण अंग के रूप में स्वीकार किया जाना चाहिए। उनके मुख्य सामाजिक विचार:-

1. रूढ़िवादिता और अस्पृश्यता की तीव्र आलोचना
2. दलितों का उत्थान
3. बाल-विवाह विरोध
4. जाति-प्रथा के विरोधी
5. यूरोपीयकरण के विरोधी
6. क्रान्तिकारी परिवर्तनों के विरोधी
7. मूर्ति-पूजा सम्बन्धी विचार

स्वामी विवेकानन्द का राजनीतिक दर्शन

① राष्ट्रवाद का धार्मिक सिद्धान्त

विवेकानन्द ने राष्ट्रवाद के धार्मिक सिद्धान्त का प्रतिपादन इसलिए किया कि वे समझते थे कि आगे चलकर धर्म ही भारत के राष्ट्रीय जीवन का मेरुदण्ड बनेगा। उनका कहना था कि राष्ट्र की भावी महानता का निर्माण उसके अतीत की महत्ता की नींव पर ही किया जा सकता है। अतीत की उपेक्षा करना राष्ट्र के जीवन का ही निषेध करने के समान है। इसीलिए भारतीय राष्ट्रवाद का निर्माण अतीत की ऐतिहासिक विरासत की सुदृढ़ नींव पर ही करना होगा।

② स्वतन्त्रता की धारणा — राजनीतिक चिन्तन के क्षेत्र में विवेकानन्द की एक अन्य महत्वपूर्ण देन उनकी स्वतन्त्रता की धारणा है। उनका स्वतन्त्रता विषयक दृष्टिकोण बहुत व्यापक था। उनका कहना था कि सम्पूर्ण विश्व अपनी अनवरत गति के द्वारा मुख्यतः स्वतन्त्रता की ही खोज कर रहा है। उन्होंने कहा: "जीवन सुख और समृद्धि की एकमात्र शर्त — चिन्तन और कार्य में स्वतन्त्रता है। जिस क्षेत्र में यह नहीं है, उस क्षेत्र में मनुष्य जाति और राष्ट्र का पतन होगा।

निष्कर्ष में यह कहा जा सकता है कि उनके प्रभावशाली व्यक्तित्व और चिन्तन द्वारा देश में जनजागरण और राष्ट्रप्रेम का मन्त्र फूंका और देशवासियों में आत्मविश्वास तथा निर्भयता के मार्ग पर आगे बढ़ाया। दलित-वर्ग

स्वामी विवेकानन्द ने पश्चिम देशों के प्रवास की शुरुआत के समय 1893 में धर्म संसद में अपने सम्बोधन से मातृभूमि के खोये हुए आत्मसम्मान, गौरव और ध्येय को पुनः प्रतिष्ठित किया। वायस लौटने पर उन्होंने भारत से आह्वान किया — उठो! जागो! और लक्ष्य प्राप्ति तक रुको मत! यह पहला वैचारिक आंदोलन था।

स्वामी विवेकानन्द ने कहा, भारत को यह सत्य विश्व को देना होगा।" प्रत्येक शब्द की अपनी एक विशिष्ट भूमिका किस प्रकार होती है, यह बात स्वामी विवेकानन्द ने इन शब्दों में व्यक्त की है,

जैसे प्रत्येक मनुष्य का एक व्यक्तित्व होता है, ठीक उसी तरह प्रत्येक जाति का भी अपना एक व्यक्तित्व होता है। जिस प्रकार एक व्यक्ति कुछ विशिष्ट बातों में अपने विशिष्ट लक्षणों में अन्य व्यक्तियों से पृथक होता है, उसी प्रकार एक जाति भी कुछ विशिष्ट लक्षणों में दूसरी जाति से भिन्न हुआ करती है। और जिस प्रकार प्रकृति की व्यवस्था में किसी विशेष उद्देश्य की पूर्ति करना हर एक मनुष्य का जीवनोद्देश्य होता है, जिस प्रकार अपने पूर्व कर्म द्वारा निर्धारित विशिष्ट मार्ग से उस मनुष्य को चलना पड़ता है, ठीक ऐसा ही जातियों के विषय में भी है। प्रत्येक जाति को किसी न किसी दैवनिर्दिष्ट उद्देश्य को पूरा करना पड़ता है। प्रत्येक जाति को संसार में एक सन्देश देना पड़ता है तथा प्रत्येक को एक व्रतविशेष का उद्यापन करना होता है।

Teacher's Signature

अतः आरम्भ से ही हमें यह समझ लेना चाहिए कि हमारी जाति का यह व्रत क्या है? विधाता ने उसे भविष्य के किस निर्दिष्ट उद्देश्य के लिए नियुक्त किया है, विभिन्न राष्ट्र की पृथक-पृथक उन्नति और अधिकार में हमें कौन सा स्थान ग्रहण करना है, विभिन्न जातियों स्वरों की समस्वरता में हमें कौन सा स्वर आलापना है।

यह प्रश्न पूछा जाना चाहिए कि "भारत के पास विश्व को देने के लिए क्या है?" या "सभी जातियों में सामञ्जस्य स्थापित करने हेतु क्या योगदान है?" भारत का जीवनव्रत है- मानवजाति का आध्यात्मीकरण। स्वामी विवेकानन्द ने कहा था - भारतीय जीवन-रचना का यही प्रतिपाद्य विषय है, उसके अनन्त संगीत का यही वादित्व है, उसके अस्तित्व का यही मेरुदण्ड है, उसके जीवन की यही आधार शिला है, उसके अस्तित्व का एकमात्र हेतु --- मानव जाति का आध्यात्मीकरण। अपने इस लम्बे जीवन प्रवाह में भारत अपने इस मार्ग से कभी भी विचलित नहीं हुआ, चाहे तातारों का शासन रहा हो चाहे तुर्कों का, चाहे मुगलों ने राज्य किया हो चाहे अंग्रेजों ने। स्वामी विवेकानन्द ने हमें चेतावनी देते हुए कहा था कि - साथ ही हमें न भूलना चाहिए कि आध्यात्मिक विचारों की विश्व-विजय से मेरा तात्पर्य है उन सिद्धान्तों के प्रचार से, जिनसे जीवन-संचार हो, न कि उन लौकिक कुसंस्कारों से, जिन्हें हम सदियों से अपनी छाती से लगाते आये हैं। इनको तो इस भारत भूमि से भी उखाड़कर दूर फेंक देना चाहिए, जिससे वे सदा के लिए नष्ट हो जायें।